उपसंहार

उपसंहार

'श्री अमृतलाल नागर और श्री गंगाप्रसाद मिश्र के कथा-साहित्य में प्रतिबिम्बित लखनऊ का जन-जीवन' पर प्रस्तुत इस शोध-प्रबंध हेतु जो संक्षिप्त रुपरेखा बनाई गई थी, तदनुसार छः अध्यायों का यह शोध-प्रबन्ध पूर्ण करते हुए अंत में 'उपसंहार' के रूप में निवेदन है-

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध लखनऊ को 'अपने साहित्य में अधिकतम समाहित करने वाले दो प्रसिद्ध हिन्दी कथाकारों के कथा-साहित्य में प्रतिबिंबित लखनऊ के जन-जीवन' पर जो अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, उसमें प्रथम अध्याय 'अमृतलाल नागर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पर केंद्रित है। इसमें नागरजी के वंशजों के मूल समेत नागरजी का सम्यक जीवन-परिचय, नागरजी के सृजन के प्रेरणा-स्रोत और नागरजी का साहित्य-रचना के विविध आयामों के अन्तर्गत संपूर्ण कथा-साहित्य के साथ ही उनके कथेतर-लेखन को भी विषय बनाया गया है। नागरजी की अभिरुचि एवं व्यक्तित्व-विश्लेषण तथा फिल्मी दुनिया से उनके संबंध का विस्तृत-अध्ययन प्रस्तुत करते हुए उनके शौक एवं अन्य रूचियों तथा पुरस्कार एवं सम्मान के क्रम में उनके स्वर्गवास तक की विषय वस्तु समेटी गयी है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का दूसरा अध्याय 'श्री गंगाप्रसाद मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' है इसमें उनके विस्तृत जीवन-परिचय, अभिरुचियों एवं व्यक्तित्व के विश्लेषण के साथ उनकी साहित्य-रचना के विविध आयामों के अंतर्गत उनके कथा-साहित्य और कथेतर साहित्य के साथ ही उनके सृजन के प्रेरणा-स्रोत सहित मिश्रजी के निधन तक को इस अध्याय में विषय बनाया गया है।

तीसरा अध्याय 'अमृतलाल नागर के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित लखनऊ का जन-जीवन' है। इसे नागरजी के कथा-साहित्य में लखनऊ के सामाजिक-जीवन, सांस्कृतिक-जीवन और अमृतलाल नागर के कथा-साहित्य में 'चौक' के जीवन को विशेष रूप से विवेचित किया गया है। इसमें नवाबों के समय के लखनऊ को लेकर के पश्चातवर्ती, स्वाधीनता संघर्ष कालीन और स्वातंत्र्योत्तर लखनऊ को विषद रूप से अध्ययन का विषय बनाया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'गंगाप्रसाद मिश्र के कथा-साहित्य में प्रतिबिंबित लखनऊ का जन-जीवन' पर केंद्रित है। इसमें गंगाप्रसाद मिश्र के कथासाहित्य में लखनऊ के सामाजिक और सांस्कृतिक

जन-जीवन के साथ ही लखनऊ के नगरीय और ग्रामीण-समाज तथा उसकी लोक-संस्कृति, पूँजीवादी संस्कृति और सामाजिक संस्कृति का अध्ययन गंभीरता से तथा सम्यक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का पाँचवा अध्याय 'अमृतलाल नागर और गंगा प्रसाद मिश्र के कथा-साहित्य में सम-सामयिक लखनऊ और उसकी प्रासंगिकता', अध्ययन की विषय-वस्तु है। अतः विषय के अनुरूप नागरजी और मिश्रजी के कथा-साहित्य का अवगाहन करते हुए अपेक्षित विषय का अध्ययन प्रस्तुत हुआ है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का अन्तिम एवं छठा अध्याय 'अमृतलाल नागर और गंगाप्रसाद मिश्र के कथासाहित्य में भाषा-शिल्प' का है इस विषय को नागरजी एवं गंगाप्रसाद मिश्र के उपन्यासों और कहानियों के कालक्रमानुसार विकास के परिप्रेक्ष्य में देखते हुए सम्यक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है तथा उनके बाल-साहित्य को भी विवेच्य विषय बनाया गया है।

यह प्रबंध प्रस्तुत करते हुए प्रयत्न यह रहा है कि जो मेरे शोध का विषय है, उस पर मेरा जो भी अध्ययन और अनुसंधान रहा है, उसे इस शोध-प्रबंध में अधिकतम प्रस्तुत करूँ, जिससे मेरा यह शोध-प्रबंध स्तरीय और लोकोपयोगी हो।